बन में सरूप सिनगार

वतन आपनो, ब्रह्मसृष्ट को देऊं बताए।
धाम की सुध मैं सब देऊं, ज्यों अंतस्करन में आए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं अपनी ब्रह्मसृष्टियों को घर की पूरी पहचान करा देती हूं जिससे उनके दिल में याद आ जाए।

इन भोम की रेती क्यों कहूं, उज्जल जोत अपार।
भोम बन आसमान लो, झलकारों झलकार।। २ ।।

इस भूमि की रेती बहुत उज्ज्वल है। इसकी किरणें पृथ्वी पर, वनों में और आसमान तक झलकती हैं।

जोत जरे इन जिमी की, मावत नहीं आसमान।
तिन जिमी के बन को, जुबां कहा करसी बयान।। ३ ।।

जिस जमीन के एक कण की ज्योति आसमान में नहीं समाती, तो फिर इस जमीन के वनों की शोभा यह जबान कैसे वर्णन करे?

इन भोम रंचक रेत की, तेज न माए आकास।
जो नंग इन जिमी के, क्यों कहे जुबां प्रकास।। ४ ।।

इस जमीन के रेत के कण की ज्योति आसमान तक जाती है, तो फिर इस जमीन के नगों (नगीनों) के प्रकाश को जबान कैसे वर्णन करे?

जोत जिमी पोहोंचे आसमान लो, आसमान पोहोंचे जोत बन।
सो छाए रही ब्रह्मांड को, सब ठौरों उठत किरन।। ५ ।।

जमीन की ज्योति आसमान तक फैलती है और आसमान से फिर ज्योति वनों से टकराती है। इस तरह चारों तरफ किरणें फैलकर सारे परमधाम में छा जाती हैं।

ए मंदिर झरोखे बन पर, झलकत हैं कई नंग।
बन फूल फल बेलियां, लगत झरोखों संग।। ६ ।।

मन्दिरों के झरोखे वन के ऊपर कई नगों (नगीनों) से जड़े जगमगाते हैं। झरोखों के साथ वन, फूल, फल और बेलें बड़ी सुन्दर लगती हैं।

कई रंग नंग झलकत, जिमी झलके दिवालों बन।
सो छाए रही जोत आसमान में, पसु पंखी नूर रोसन।। ७ ।।

कई किस्म के रंग और नगों की झलकार जमीन, दीवारों और वनों पर होती है। यह तेज आसमान में छा जाता है जिसमें सुन्दर पशु-पक्षियों की शोभा और बढ़ जाती है।

जिमी आकास बिरिख नूर के, पात फूल फल नूर।
दिवाल झरोखे नूर के, क्यों कहूं नूर जहूर।। ८ ।।

यहां की जमीन, आकाश, वृक्ष, पत्ते, फूल, फल, झरोखे, दीवार सब नूर के हैं। इनके तेज का वर्णन कैसे करूं?

Nijanand App

जात अलेखे पंखियों, पसु अलेखे जात।
जात जात अनगिनती, क्यों कर कहूं विख्यात।। ९ ।।

यहां अनगिनत पशु-पक्षियों की जातियां हैं। उन जातियों में भी अनेक तरह की शोभा है। इसका वर्णन कैसे करूं?

पसु पंखी अति सुन्दर, बोलत अमृत रसान।
सुन्दरता केस परन की, क्यों कर करों बयान।। १० ।।

पशु-पक्षी बहुत सुन्दर हैं और मीठी बोली बोलते हैं। उनके बालों की तथा परों की सुन्दरता का कैसे बयान करूं?

कई विध बानी बोलहीं, कई विध जिकर सुभान।
कई दिन रातों रटत हैं, मुख मीठी कई जुबान।। ११ ।।

यह कई तरह की बोली बोलकर जिक्र-ए-सुभान करते हैं। कई तो उनमें अपनी मीठी जबान से रात-दिन श्री राजजी महाराज की रट लगाए रहते हैं।

मीठे नैन बैन मुख मीठे, सोभा सुन्दर अमान।
जिन विध धनी रीझहीं, खेलें बोलें तिन तान।। १२ ।।

उनमें कई सुन्दर मीठे नैनों एवं मीठे मुख की मीठी बोली से सुन्दर और प्यारे लगते हैं। वह जिस तरह से धनी रीझें उसी तरह की बोली बोलकर, खेलकर, अर्थात् तान लगाकर रिझाते हैं।

विचित्र बानी माधुरी, बन में गूंजें करें गान।
चेतन चैन जो चातुरी, क्यों कर करूं बखान।। १३ ।।

उनकी विचित्र तरह की मीठी वाणी से वन गूंज रहा है। उन सबकी चेतनता, कला और चतुराई का कैसे वर्णन करूं?

आए दरवाजे आगे खड़े, खेलोने अति घन।
स्याम स्यामाजी साथ को, पसु पंखी लेवें दरसन।। १४ ।।

यह धनी के खिलौने दरवाजे के आगे चांदनी चौक में आकर खड़े हो जाते हैं और श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सुन्दरसाथ के दर्शन कर प्रणाम करते हैं।

ठौर खेलन के चित धरो, विध विध के बन माहें।
केहेती हों आगूं तुम, जो हिरदे चढ़ चढ़ आए।। १५ ।।

इन पशु-पक्षियों के खेलने के ठिकाने ध्यान से देखो जो वन में तरह-तरह के हैं। जिसकी याद बार-बार मेरे मन में आती है। मैं तुम्हारे आगे कहती हूं ताकि तुम्हें याद आ जाए।

आगूं धाम के बन भला, जमुना जी सातों घाट।
तीन बाएं तीन दाहिने, बीच जल कठेड़ा पाट।। १६ ।।

रंग महल के आगे जमुनाजी के सातों घाट के वन शोभायमान हैं। तीन दाएं, तीन बाएं तथा एक बीच में जल के ऊपर पाट घाट का कठेड़ा शोभायमान है।

Nijanand App

घाट पाट जल ऊपर, अमृत बन हैं जांहें।
इन बन की सोभा क्यों कहूं, मेरो सब्द न पोहोंचे तांहें।। १७ ।।

जल के ऊपर पाट घाट के पीछे अमृत वन है। इस वन की शोभा कैसे कहूं? यहां के शब्द वहां नहीं पहुंचते।

झीलन स्यामा संग राज सों, साथें किए जल केलि।
इन समें के विलास की, क्यों कहूं रंग रेलि।। १८ ।।

श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सुन्दरसाथ पाट घाट में जल के खेल खेलते हैं। इस समय के आनन्द और रंगरलियों का कैसे वर्णन करूं?

मानिक हीरे पाच पोखरे, नूर तरफ से चारों द्वार।
चारों खूंटों थंभ नीलवी, अम्बर भर्‌यो झलकार।। १९ ।।

मानिक, हीरा, पाच और पुखराज के चारों रंगों के दो-दो थंभ (स्तम्भ) पाट घाट की चारों दिशाओं के चार दरवाजे में शोभा देते हैं। पाट घाट के चारों कोनों पर चार थंभ नीलवी (नीलम) के हैं जो आसमान तक झलकते हैं।

ए बारे थंभों चांदनी, सोभित जल ऊपर।
साथ बैठा सब फिरता, चारों तरफों पसर।। २० ।।

जल के ऊपर बारह थंभों के ऊपर चांदनी आई है (छत आई है)। सुन्दरसाथ चारों तरफ फैलकर बैठते हैं।

सोभा बन संझा समें, फल फूल खुसबोए।
साथ बैठा पाट ऊपर, बीच सुंदर सरूप दोए।। २१ ।।

संध्या के समय वन की शोभा फल फूलों की सुगन्धि से भरी है। सब सुन्दरसाथ पाट घाट पर बैठते हैं। श्री राजश्यामाजी सुन्दरसाथ के मध्य बैठते हैं।

बीच बैठक राज स्यामाजी, साथ गिरदवाए घेर।
साजे सकल सिनगार, सोभा क्यों कहूं इन बेर।। २२ ।।

श्री राजश्यामाजी बीच में बैठते हैं। सुन्दरसाथ घेरकर बैठते हैं। सुन्दरसाथ के सिनगार के इस समय की शोभा का वर्णन कैसे करूं?

साथ बैठा पाट ऊपर, लग कठेड़े भराए।
जोत करी आकास लों, जानों आकास में न समाए।। २३ ।।

सुन्दरसाथ पाट घाट पर कठेड़े तक भरकर बैठे हैं। उनकी सुन्दरता की ज्योति आकाश तक फैलती है।

कई रंग नंग कठेड़े, परत जल में झांईं।
तेज जोत जो उठत, तले मावे न आकास माहीं।। २४ ।।

कठेड़े में कई तरह के रंगों के नग जड़े हैं। इनकी झलकार जल में होती है। उसकी जो किरणें उठती हैं वह आकाश में नहीं समातीं।

Nijanand App

सो झांईं जल लेहेरां लेवहीं, तिनसे लेहेरां लेवे आसमान।
कई रंग लेहेरें तिनकी, एक दूजी न सके भान।। २५ ।।

जैसे-जैसे जल में झांई (परछाईं) लहरों के साथ हिलोरे लेती है वैसे ही उस झांई की तरंगें आकाश में हिलती हैं। इनके कई रंग की लहरें जिनका तेज एक-दूसरे रंग को दबा नहीं सकता, उठती हैं।

जल में सिनगार सखियन के, लेहेरां लेवें संग छांहें।
होए ऊंचे नीचें आसमान लो, केहेनी अचरज न आवे जुबांए।। २६ ।।

जमुनाजी के जल में सखियों के सिनगार की परछाईं लहरें लेती है और उन लहरों का तेज आसमान तक फैलता है। इस चकित करने वाली शोभा का वर्णन जबान से नहीं होता।

जेती जुगत पाट ऊपर, सब लेहेरां लेवें माहें जल।
जानों तले ब्रह्मांड दूजो भयो, भयो आसमान जोत सकल।। २७ ।।

पाट घाट की सारी शोभा जल की लहरों में झलकती है। लगता है नीचे जल में दूसरा ब्रह्माण्ड बन गया है जिसका तेज आसमान तक फैल रहा है।

बन पाट जोत आसमान लों, सब देखत जल माहें।
एक नयो अचंभोए बन्यो, केहेनी में आवत नाहें।। २८ ।।

वन की पाट घाट का तेज आसमान तक फैलता हुआ जल में दिखाई देता है। इस तरह से एक हैरानी वाली शोभा दिखाई देती है जो कहनी में नहीं आती।

ज्यों ज्यों जल लेहेरां लेवहीं, त्यों त्यों तले ब्रह्मांड डोलत।
कई विध तेज किरनें उठें, नूर आसमान लेहेरां लेवत।। २९ ।।

जैसे-जैसे जल की लहरें हिलती हैं वैसे-वैसे पाट घाट के प्रतिबिम्ब का ब्रह्माण्ड जल में हिलता है। इसके कई तरह के तेज की किरणें आसमान तक लहराती हैं।

ए ब्रह्मांड कह्यो न जावहीं, पर समझाए न निमूने बिन।
सब्दातीत के पार की, बात केहेनी झूठी जिमी इन।। ३० ।।

इस प्रतिबिम्ब के ब्रह्माण्ड की शोभा वर्णन करने में नहीं आती, परन्तु नमूने के बिना कैसे समझाएं? यह शोभा शब्दातीत की है जिसका वर्णन इस झूठी जमीं में बैठकर करना है।

हर घाटों सोभा कई विध, कई जुदे जुदे सुख सनंध।
बन नीके अपना देखिए, रस सीतल वाए सुगंध।। ३१ ।।

हर घाटों की शोभा कई तरह की है तथा कई तरह के अलग-अलग सुख हैं। अपने वनों को अच्छी तरह से देखें। यहां पर शीतलता और रसों से भरपूर सुगन्धित हवा चलती है।

क्यों कहूं सोभा बन की, और छाए रही फूल बेल।
तले खेलें सैयां सरूपसों, आवें एक दूजी कंठ मेल।। ३२ ।।

वनों की शोभा मैं कैसे कहूं जहां पर फूलदार बेलें छाई हैं। उनके नीचे श्री राजश्यामाजी, सखियां एक-दूसरे के गले में हाथ डालकर खेलती हैं।

Nijanand App

जिमी बन जुबां न आवहीं, तो क्यों कहूं सिनगार जहूर।
सुन्दरता सरूपों की, कई रस सागर भर पूर।। ३३ ।।

जमीन की, वन की सिफत जबान से कही नहीं जाती है, तो सिनगारों की शोभा का वर्णन कैसे करें? श्री राजश्यामाजी के सुन्दर स्वरूपों की शोभा कई सागरों से भी अधिक भरपूर दिखाई देती है।

अब क्यों कहूं जोत सरूपों की, और सुन्दरता सिनगार।
वस्तर भूखन इन जिमी के, हुआ आकास उद्दोतकार।। ३४ ।।

अब श्री राजश्यामाजी के स्वरूपों की और सिनगार की सुन्दरता का वर्णन कैसे कहें? उनके वस्त्र और आभूषणों के नूर के तेज से आकाश जगमगा रहा है।

कई रंग के नकस, कई भांत बेल फूल माहें।
कई रंग इनमें जवेर, इन जुबां में आवत नाहें।। ३५ ।।

आभूषणों में कई किस्म के रंग, नक्शकारी, बेलें, फूल, जवाहरात जड़े हैं जो इस जबान से वर्णन करने में नहीं आते।

इन बेल फूल कई पांखड़ी, तिन हर पांखड़ी कई नंग।
तिन नंग नंग कई रंग उठें, तिन रंग रंग कई तरंग।। ३६ ।।

इन बेलों के फूल की कई पंखुड़ियां हैं और हर पंखुड़ी में कई तरह के नग जड़े हैं। प्रत्येक नग में कई तरह के रंग और प्रत्येक रंग में कई तरह की तरंगें उठती हैं।

ए स्वाद आतम तो आवहीं, जो पलक न दीजे भंग।
अरस-परस एक होवहीं, परआतम आतम संग।। ३७ ।।

आत्मा को इसका स्वाद तब मिले जब नजर उधर ही लगी रहे। तब आतम और परआतम अरस-परस (परस्पर) एक होती है।

अब भूखन की मैं क्यों कहूं, जो इत हैं हेंम मनी।
कई विध की इत धात है, नंग जात नाहीं गिनी।। ३८ ।।

आभूषणों की शोभा का वर्णन मैं कैसे करूं जो वहां सोने के हैं और मणियों से जड़े हैं। आभूषण भी कई धातुओं के हैं जिनके नगों की किस्में नहीं गिनी जातीं।

क्यों कहूं इन बानी की, मुख से उचरत जे।
मीठी मीठी मुसकनी, सब भीगे इस्क के।। ३९ ।।

यहां जो मुख से वाणी बोलते हैं उसका वर्णन कैसे करूं? मीठी-मीठी मुस्कान के साथ सभी इश्क से भरपूर वाणी बोलते हैं।

हंसत नेत्र मुख नासिका, श्रवन हंसत चरन।
भों भृकुटी गाल अधुर, हंसत सिनगार भूखन।। ४० ।।

सबकी आंखें, मुख, नासिका, कान, चरण, भृकुटि, भौंह, गाल, होंठ और सब सिनगार के आभूषण, हंसते हुए दिखाई देते हैं।

Nijanand App

चाल चातुरी कहा कहूं, लटक चटक भरे पाए।
मटके अंग मरोरते, कछू ए गत कही न जाए।। ४१ ।।

इनकी चतुर चाल भी लटक-चटक से भरी है और यह मटक कर अंग मरोड़ते हैं। तब यह शोभा कहने में नहीं आती।

ए सुख सरूपों की मुसकनी, रंग रस गत मुख बान।
ए भोम बन धनी धाम को, रेहेस लीला नित्यान।। ४२ ।।

स्वरूपों की मुस्कराहट के सुख, रस भरे रंगों की चाल, सुन्दर मीठी वाणी, वह भूमि, वन, धाम धनी की नित्य लीला करने के स्थान हैं जिनके सुखों का वर्णन करना सम्भव नहीं है।

अब क्यों कहूं भूखन की, और क्यों कहूं बानी मिठास।
क्यों कहूं रेहेस जो पिउ को, जो अंग अंग में उलास।। ४३ ।।

अब आभूषण की और उनसे निकलने वाली मीठी वाणी का कैसे बखान करूं? श्री राजजी महाराज के अंग-अंग में उल्लास भरा है। उस रहस्य को कैसे बताऊं?

इन जिमी इन बन में, करें खेल सरूप जो एह।
कहा कहूं इन विलास की, जो करत प्रेम सनेह।। ४४ ।।

इस जमीन और वनों में यह स्वरूप रोज ही खेलते हैं। इनके प्रेम, स्नेह और विलास का कहां तक वर्णन करूं?

कई रंग रेहेस संग धनी के, केते कहूं विलास।
प्रेम प्रीत सनेह कई रीत, मीठी मुसकनी कई हांस।। ४५ ।।

श्री राजजी महाराज के साथ विलास के कई तरह के रस भरे आनन्द प्रेम, प्रीति, स्नेह के ढंग तथा मीठी मुस्कान और हंसी का वर्णन कैसे करूं?

नैन सों नैन लेत रंग सैंनें, अरस-परस उछरंग।
उर मुख नेत्र कर कंठ, यों सुख सब विध अंग।। ४६ ।।

श्री राजजी महाराज नैनों से नैन मिलाते हैं और मस्ती में इशारे करते हैं जिससे अरस-परस (परस्पर) आनन्द और बढ़ जाता है। छाती, मुख, नेत्र, कान, कण्ठ सब अंग सुखदायी दिखाई देते हैं।

बंके नैन समारे सर बंके, बंकी सारस भों बंकी।
बंके बैन लगत बान बंके, बंकी चलत बंक लंकी।। ४७ ।।

श्री राजजी महाराज के तिरछे नेत्र तीर के समान चुभने वाले हैं। इनके ऊपर तिरछी भौंहें शोभायमान हैं। श्री राजजी महाराज के अनूठे वचन तीर के समान चुभते हैं (अनोखा आनंद देते हैं)। उनकी कमर लटकाकर चलने की चाल सुन्दर शोभायुक्त है।

रस लेत धाम के सरूपसों, एक दूजी को ठेल।
विविध विहार अलेखे अंगों, क्यों कहूं खुसाली खेल।। ४८ ।।

परमधाम के यह स्वरूप एक दूसरे को मस्ती में धकेलकर बड़ा आनन्द लेते हैं। वह तरह-तरह के खेल अपने अंगों से बेशुमार करते हैं जिन खेलों की खुशहाली का कैसे बयान करूं?

Nijanand App

अंग इस्क इन भोम के, अलेखे अंग असल।
कई रंग रस सरूपसों, जुदे जुदे या सामिल।।४९।।

उस भूमि के सभी अंग इश्क से भरपूर हैं और यह सभी स्वरूप एक साथ और अलग-अलग कई तरह के बेशुमार आनन्द व रस लेते हैं।

कहा कहूं वस्तर भूखन की, नूर रोसन जोत उजास।
स्याम स्यामाजी साथ की, अंग अंग पूरत आस।।५०।।

वस्त्र और आभूषणों के नूर की रोशनी का कैसे वर्णन करूं? यह श्यामश्यामाजी और श्री सुन्दरसाथ के अंग-अंग की चाहना को पूर्ण करते हैं।

ए जोत में सोभा सुन्दर, देखिए हिरदे में आन।
भर भर प्याले पीजिए, देख केहे सुन कान।।५१।।

इस ज्योति की सुन्दर शोभा को हृदय में लेकर, देखकर, सुनकर इश्क के भर-भर कर प्याले पीने का आनन्द लो।

भोम बन तलाव सोभित, कुन्ज-बन बीच मंदिर।
कहा कहूं गलियन की, छाया प्रेमल सुंदर।।५२।।

इन वनों की भूमि, सुन्दर हौज कौसर तालाब की शोभा, बीच में कुंज वन के फूलों के मन्दिर तथा गलियों में सुन्दर छाया, सुगन्धि और सुन्दरता सब जगह फैली है।

नरमाई इन रेत की, उज्जल जोत सुपेत।
खुसबोए कही न जावहीं, निकुन्ज-बन या रेत।।५३।।

निकुंज वन की रेत नरम है, उज्ज्वल है, सफेद है तथा खुशबूदार है। इसका वर्णन करने में नहीं आता है।

सोभा पाल तलाव की, कही न जाए जुबां इन।
बन द्योहरी जल मोहोल की, रोसन रोसन में रोसन।।५४।।

हौज कौसर के तालाब की पाल की शोभा इस जबान से वर्णन करने में नहीं आती। तालाब के चारों तरफ के वन, एक सौ अट्ठाईस द्योहरी, जल तथा टापू महल की शोभा एक-दूसरे से बढ़ती जाती है।

द्योहरियां सोभित ताल की, पाल पांवड़ियां अन्दर।
सोभा कहा कहूं सब जड़ित की, बीच मोहोल जल ऊपर।।५५।।

हौज कौसर की पाल के ऊपर (१२४) द्योहरियां तथा नीचे की तरफ अन्दर उतरने वाली सीढ़ियों की शोभा का वर्णन कैसे कहूं? सब नगों से जड़ी हैं तथा जल के अन्दर टापू महल शोभायमान है।

जुदी जुदी जुगतें सोभित, बन मोहोलों लिया घेर।
गिरद झरोखे नवों भोम के, बीच धाम बन चौफेर।।५६।।

टापू महल के वनों के वृक्षों को तरह-तरह की शोभा ने घेर लिया है। परमधाम के नवों भोम के चारों तरफ के झरोखों के बीच रंग महल है। चारों तरफ वनों की शोभा है।

Nijanand App

याही भांत अछर की, बीच बन गलियां जानवर।
खेल खेलें अति सोहने, क्यों बरनों सोभा दोऊ घर।।५७।।

इसी तरह से अक्षरधाम की तरफ वन, गलियां और जानवरों की शोभा है। जहां पर जानवर तरह-तरह के सुहावने खेल खेलते हैं। इन दोनों धामों की शोभा का वर्णन कैसे करूं?

साम सामी दोऊ दरबार, उठत रोसनी नूर।
क्यों कहूं इन जुबानसों, करें जंग दोऊ जहूर।।५८।।

दोनों धाम के दरवाजे आमने-सामने हैं। इनकी सुन्दर रोशनी फैलकर आपस में टकराती है। उस शोभा का इस जबान से कैसे वर्णन करूं?

आगूं बड़े द्वार के, बीस थंभ तरफ दोए।
रंग पांचों नूर जहूर के, ए सिफत किन मुख होए।।५९।।

रंग महल के बड़े दरवाजे के दोनों तरफ चबूतरों की किनारे पर बीस थंभ (दस खुले, दस अकसी) आए हैं। यह पांच रंगों के हैं (हीरा, मानिक, पुखराज, पाच और नीलवी) और झलक रहे हैं। उसकी सिफत किस मुख से बयान करें?

द्वार आगूं दोए चबूतरे, दोए तले बीच चौक।
हरा लाल दोऊ पर दरखत, हक हादी रूहों ठौर सौक।।६०।।

धाम के द्वार के आगे दो चबूतरे हैं। नीचे चांदनी चौक में दो सुन्दर चबूतरे हैं जिनके ऊपर एक पर हरा, एक पर लाल वृक्ष आए हैं। यहां पर श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें बड़ी चाहना से बैठते हैं।

भोम बन आकास का, अवकास न माए उजास।
कछुक आतम जानहीं, सो कह्यो न जाए प्रकास।।६१।।

यहां की भूमि, वन तथा आकाश का तेज समाता नहीं है। यदि आत्मा में कुछ अनुभव हो जाए तो फिर कहा नहीं जाता।

महामत कहे बन धाम का, विध विध दिया बताए।
जो होसी ब्रह्मसृष्ट का, ए बान फूट निकसे अंग ताए।।६२।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि परमधाम के ऐसे वन की हकीकत तरह-तरह से तुमको बताई है। अब जो ब्रह्मसृष्टि होंगी, यह वचन उनके हृदय में चुभ जाएंगे तो परमधाम याद आ जाएगा।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। ३६८ ।।

जमुना जोए किनारे सात घाट

केल का घाट

कतरे कई केलन के, लटक रहे जल पर।
आगे पीछे कोई नहीं, सब सोभित बराबर।।१।।

केलों के कई गुच्छे जमुनाजी के जल पर लटकते हैं। वह सब एक समान शोभा देते हैं। कोई आगे पीछे नहीं है।

Nijanand App